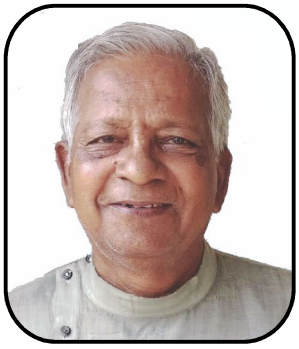

PROF. (DR.) CHANDRAKANT TRIKAMLAL SHETH (POSTHUMOUS)

Prof. (Dr.) Chandrakant Trikamlal Sheth was a distinguished poet, essayist, critic, translator, and editor, who has made significant contributions of high order to Gujarati literature and academia. He served as an esteemed professor at Gujarat Vidyapith, an institution founded by Mahatma Gandhi, for 35 years until his superannuation. His literary and academic journey continued when he joined the Gujarat Vishwakosh Trust in March 1998, where he played a crucial role for over 25 years.

2. Born on February 3, 1938, in Kalol, Panchmahal district, Gujarat, Prof. (Dr.) Sheth had an impressive body of work spanning over 150 published works across multiple literary genres. His literary career began in 1948 with a poignant poetic tribute to Mahatma Gandhi. Since then, he has authored fifteen collections of poetry (1972–2023), demonstrating mastery in diverse forms, including sonnets, ghazals, epic-length poems, and songs. Writing in both Chhand and Achhand poetic traditions, he explores themes of despair, hope, and self-discovery. As a literary critic, he has analyzed Gujarati, Indian, and international works through Indian and Western critical frameworks, focusing on principles, coherence, narrative development, and creativity. His contributions to literary criticism include 31 books (1979–2022), offering profound insights into the evolution of literary trends, styles, and cultural contexts.

3. Apart from poetry and criticism, Prof. (Dr.) Sheth has made remarkable contributions to creative writing, including essays, short stories, and monologues. Essay writing remained his preferred genre, with 17 collections showcasing his imaginative, descriptive, and reflective style. His autobiography, "Dhool Ma Ni Paglio," is a deeply introspective and compelling work that has resonated widely, with eight editions and translations into Rajasthani and Hindi. His literary works, particularly his poetry, have been widely recognized and included in school and college curriculums, shaping generations of readers.

4. Prof. (Dr.) Sheth has played a remarkable role in Gujarat Vishwakosh Trust's monumental endeavour of producing 25 volumes, 25,000-page general encyclopaedia in Gujarati. Following its successful completion, he led the creation of the Children's Encyclopaedia (Bal-Vishwakosh), overseeing the production of ten volumes. Additionally, he was instrumental in updating the first ten volumes of the general encyclopaedia and contributed significantly to several subject-specific encyclopaedic works.

5. Prof. (Dr.) Sheth's contributions have left an indelible mark on literature and academia. His vast body of work has fostered a love for reading, inspired critical thinking, and promoted intellectual growth among readers of all ages. His legacy is a testament to the transformative power of words, ensuring that his influence will continue to inspire future generations.

6. Over his illustrious career, Prof. (Dr.) Sheth has been honoured with 36 awards for his contributions to literature. His autobiography won the prestigious Sahitya Akademi Award (1986), while his work in children's literature earned him the Sahitya Akademi Bal Sahitya Award (2018). Other notable accolades include Kumar Chandrak (1964), Narmad Suvarna Chandrak (1964), Ranjitram Suvarna Chandrak (1985), Uma-Snehrashmi Prize (1984–85), Dhanji Kanji Gandhi Suvarna Chandrak (1986), Narsinh Mehta Award (2005), Sahitya Gaurav Puraskar (2006), and the Savyasachi Saraswat Award (2023).

7. Prof. (Dr.) Sheth passed away on 2nd August, 2024.

प्रो. (डॉ.) चंद्रकान्त त्रिकमलाल शेठ (मरणोपरांत)

प्रो. (डॉ.) चंद्रकांत त्रिकमलाल शेठ एक प्रतिष्ठित कवि, निबंधकार, आलोचक, अनुवादक और संपादक थे, जिन्होंने गुजराती साहित्य और शिक्षा जगत में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने महात्मा गांधी द्वारा स्थापित संस्थान गुजरात विद्यापीठ में अपनी सेवानिवृत्ति पर्यन्त 35 वर्षों तक एक प्रतिष्ठित प्रोफेसर के रूप में सेवाएं प्रदान की। उनकी साहित्यिक और शैक्षणिक यात्रा मार्च 1998 में गुजरात विश्वकोष ट्रस्ट में शामिल होने तक जारी रही, जहाँ उन्होंने 25 वर्षों से भी अधिक समय तक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. 3 फरवरी, 1938 को गुजरात के पंचमहल जिले के कलोल में जन्मे, प्रो. (डॉ.) शेठ के पास कई साहित्यिक विधाओं में 150 से अधिक प्रकाशित कृतियों का एक प्रभावशाली संग्रह था। उनके साहित्यिक जीवन की शुरुआत वर्ष 1948 में महात्मा गांधी को एक मार्मिक काव्य श्रद्धांजलि देने के साथ हुई। तब से, उन्होंने कविता के पंद्रह संग्रह (1972–2023) लिखे हैं, जिसमें सॉनेट, ग़ज़ल, महाकाव्य आधारित कविताएँ और गीतों सहित विविध रूपों में अपनी महारत हासिल की है। छंद और अछंद दोनों काव्य परंपराओं में लिखते हुए, वे निराशा, आशा और आत्म–अन्वेषण विषयों की जांच करते हैं। एक साहित्यिक आलोचक के रूप में, उन्होंने भारतीय और पश्चिमी आलोचनात्मक फ्रेमवर्क के माध्यम से गुजराती, भारतीय और अंतर्राष्ट्रीय कार्यों का विश्लेषण किया है, जो सिद्धांतों, सुसंगति, वृतांत–विकास और रचनात्मकता पर केंद्रित है। साहित्यिक आलोचना के क्षेत्र में उनके योगदान में 31 पुस्तकें (1979–2022) शामिल हैं, जो साहित्यिक प्रवृत्तियों, शैलियों और सांस्कृतिक संदर्भों के विकास में गहन अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

3. कविता और आलोचना के अलावा, प्रो. (डॉ.) शेठ ने निबंध, लघु कथाएँ और स्वगत–कथन सहित रचनात्मक लेखन में उल्लेखनीय योगदान दिया है। निबंध लेखन उनकी पसंदीदा शैली बनी हुई रही, जिसमें 17 संग्रह उनकी कल्पनाशील, वर्णनात्मक और चिंतनशील शैली को प्रदर्शित करते हैं। उनकी आत्मकथा, "धूल मा नी पग्लियो" एक गहन आत्म विचारशील और सम्मोहक रचना है, जो राजस्थानी और हिंदी में आठ संस्करणों और अनुवादों के साथ व्यापक रूप से प्रतिध्वनित हुई है। उनके साहित्यिक कार्य, विशेष रूप से उनकी कविता, को व्यापक रूप से स्वीकृति मिली है और आईएसई स्कूल और कॉलेज के पाठ्यक्रमों में शामिल किया गया है, जिससे पाठकों की कई पीढ़ियाँ लाभांवित हो रही हैं।

4. प्रो. (डॉ.) शेठ ने गुजराती में 25 खंडों, 25,000–पृष्ठों वाले सामान्य विश्वकोश के निर्माण के गुजरात विश्वकोष ट्रस्ट के महान प्रयास में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है। इसके सफल समापन के बाद, उन्होंने बच्चों के विश्वकोश (बाल–विश्वकोष) के निर्माण की अगुआई की, जिसमें दस खंडों के निर्माण उनकी देखरेख में हुआ। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सामान्य विश्वकोश के पहले दस खंडों को अद्यतन करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और कई विषय–विशिष्ट विश्वकोश के निर्माण कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

5. प्रो. (डॉ.) शेठ के योगदान ने साहित्य और शिक्षा जगत पर अमिट छाप छोड़ी है। उनके इस वृहद कार्य ने पढ़ने के प्रति पाठकों के प्रेम को बढ़ावा दिया है, आलोचनात्मक सोच को प्रेरित किया है और सभी उम्र के पाठकों के बीच बौद्धिक विकास को बढ़ावा दिया है। उनकी विरासत शब्दों की परिवर्तनकारी शक्ति का प्रमाण है, जो यह सुनिश्चित करती है कि उनका प्रभाव भविष्य की पीढ़ियों को प्रेरित करता रहेगा।

6. अपने शानदार करियर के दौरान, प्रो. (डॉ.) शेठ को साहित्य में उनके योगदान के लिए 36 पुरस्कारों से नवाज़ा गया है। उनकी आत्मकथा ने प्रतिष्ठित साहित्य अकादमी पुरस्कार (1986) जीता, जबकि बाल– साहित्य में किए गए उनके काम ने उन्हें साहित्य अकादमी बाल साहित्य पुरस्कार (2018) दिलाया। अन्य उल्लेखनीय पुरस्कारों में कुमार चंद्रक (1964), नर्मद सुवर्णा चंद्रक (1964), रंजीतराम सुवर्णा चंद्रक (1985), उमा–स्नेहरश्मी पुरस्कार (1984–85), धनजी कांजी गांधी सुवर्णा चंद्रक (1986), नरसिंह मेहता पुरस्कार (2005), साहित्य गौरव पुरस्कार (2006), और सव्यसाची सारस्वत पुरस्कार (2023) शामिल हैं।

7. प्रो. (डॉ.) शेठ का 2 अगस्त, 2024 को निधन हो गया।